डॉ. अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज

29.7.20

रीतिकाव्य

प्रश्न: रीतिमुक्त काव्यधारा के कवि सर्वाधिक महत्व के अधिकारी हैं। इस कथन की समीक्षा कीजिए।

उत्तर: आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने इतिहास ग्रंथ 'हिन्दी साहित्य के इतिहास' में लिखा है — "इन रीति ग्रंथों के कर्ता भावुक, सहृदय और निपुण कवि थे। उनका उद्देश्य कविता करना था, न कि काव्यांगो का शास्त्रीय पद्धति पर निरूपण करना। अतः उनके द्वारा बड़ा भारी कार्य यह हुआ कि रसों और अलंकारों के बहुत ही सरस, मनोहर उदाहरण संस्कृत के सारे लक्षण ग्रंथों से चुनकर इकट्ठे करें तो भी उनकी इतनी अधिक संख्या न होगी।"

कहना न होगा कि रीतिमुक्त धारा के कवियों ने प्रेम के उदात्त रूप का जो चित्रण किया है वह रीतिकाल के अन्य कवियों की तुलना में विशद है। रीति मुक्त कवियों का प्रेम काम की पीड़ा नहीं है, उनकी रचनाओं में विहित कलात्मकता के चित्र तो कम मिलते हैं, किन्तु अंतरात्मा की पुकार अधिक है। उनकी कविता में प्रत्यक्ष अनुभूति की सरसता, सहजता और रसार्द्रता पर्याप्त मात्रा में है जो कि रीतिबद्ध कवियों के काव्य में अभाव है। रीति बद्ध कवियों का प्रेम संबंधी दृष्टिकोण मुख्यतः मांसल और शारीरी था, इसलिए उनकी रचनाओं में प्रेम केवल बाह्य पक्ष ही दिखलाई पड़ता है। वह भी रूढ़िवादी अर्थों में, जिनमें प्रेम-व्यापार के लक्षण और चुने-चुनाए दृश्य थे। जबकि रीतिमुक्त का प्रेम संबंधी दृष्टिकोण सूक्ष्म, अशरीरी और मानसिक था। वह गूढ़ ऐकान्तिक और एकनिष्ठ था। उनका प्रेम मादक-क्रीड़ा न होकर शुद्ध हृदय की आवर्धात है — 'रीझी सुजान सची पटरानी बची,
बुधि बावरी ह्वै करि दासी।'

घनानंद, ठाकुर, बोधा आदि कवियों ने अपने समकालीन कवियों से इस मायने में विशिष्ट थे कि उन्होंने एक साहित्यिक परंपरा के प्रति विद्रोह किया और दूसरी ओर नैतिक मूल्यों की प्रति अपनी क्रांतिकारी दृष्टि का सूत्रपात किया। इन दोनों क्षेत्रों में नया मार्ग अपनाना और साहित्यिक रूढ़ियों का विरोध करना उनकी पहली प्राथमिकता थी।

P.T.O

अभिजात्यों मान्यताओं के नहीं मानने के कारण इनके काव्य में ऐसी विच्छित्त आ गई जो उन्हें तथा उनके काव्य को अभिनव गरिमा प्रदान की। उन्होंने अपनी कविता रीति ग्रंथों का निर्माण करने के लिए नहीं लिखी, अपितु अपने हृदय के नैसर्गिक भावनाओं को व्यक्त करने के लिए लिखी। इसलिए उनके काव्य में स्वाभाविक उन्मेष, मनोगत वेग का प्रवाह स्वाभाविक रूप में दिखाई देता है। डा० बच्चन सिंह ने ठीक ही लिखा है — "इन कवियों का प्रेम न तो रीतिबद्ध कवियों की तरह शरीरी व वायवीय है, यह प्लेटोनिक प्रेम की तरह अशरीरी और वायवी है। इनकी स्थिति कुछ दोनों की मध्यवर्ती है।"

रीतिमुक्त धारा के कवि सौंदर्य संबंधी दृष्टिकोण के प्रति अधिक सजग और जागरूक है। ये लोग अंग-प्रत्यंग के चित्रण में उतना रस नहीं लेते बल्कि सम्मिलित प्रभाव के अंकन में। इसलिए उनके यहाँ नेत्र, चितवन, संयोगपरक आमोद-प्रमोद देखने को नहीं मिलते हैं। उन्होंने सौंदर्य का स्थूल वर्णन न करके व्यापक सौंदर्य चेतना का वर्णन किया है।

रीतिमुक्त कवियों का प्रेम उदात्त है। यहाँ संयोग से अधिक वियोग का महत्व है। रीतिबद्ध कविता में वियोग वर्णन शास्त्रीयता के आवरण में लपेटकर किया गया था, किंतु रीतिमुक्त धारा के कवियों ने वेदना की विवृति के लिए अनुमान एवं नाप-जोख का आश्रय नहीं लिया। उनकी अधिकांश उक्तियाँ स्वाभाविक है। उनका हृदय वैयक्तिक विरहाग्नि में पिघलकर शुद्ध हो गया था। अतः इनके काव्य में हृदय की व्याकुलता, नेत्रों की विवशता, दैन्य, करुणा और मार्मिकता की झलक मिलती है। सारांश यह कि इन रीतिमुक्त कवियों का 'प्रेम की पीर' विलक्षण हैं, उन्हें समझने के लिए हृदय की आँखें चाहिए।

रीतिमुक्त कवियों की कविताओं में जितनी सघनता है और भावानुभूति है वह रीतिसिद्ध कवियों में रंच मात्र नहीं। रीतिमुक्त कवियों ने प्रकृति के सौंदर्य का जितना सुंदर वर्णन किया है, वह अन्यत्र दिखलाई नहीं पड़ता। रीतिकालीन ने अपने मुक्तक माध्यम से प्रकृति को मानो सजीव कर दिया है। कोकिल और चातक की वाणी द्वारा विरहिणियों का विरह को उद्दीप्त करके मानो व्याकुलता को और बढ़ा दिया है। रीतिमुक्त धारा के कुछ कवि ऐसे हुए जिन्होंने प्रकृति में स्वच्छंदता का खुला दर्शन करते हैं। P.T.O

जैसा कालिदास, भवभूति आदि संस्कृत कवियों की काव्य में देखने को मिलते हैं। स्वच्छंद दृष्टि से इन कवियों का ध्यान सांस्कृतिक पर्वों और त्योहारों की ओर भी गया है। होली का प्रेमपूर्ण चित्रण करने में पद्माकर की सहृदयता देखने को मिलती है। घनानंद ने होली के वर्णन में नायिका की शोभा और उसकी भाव-भंगिमा को अच्छी तरह उभार कर रख दिया है। ठाकुर कवि ने बुंदेलखंड के आनंद और उल्लासमय जीवन को सजीव कर दिया है। प्रदेश की संस्कृति की जो झाँकी रीतिमुक्त कवियों में देखने को मिलती है वह रीतिबद्ध कवियों में कहाँ?

भाषा के क्षेत्र में भी रीतिमुक्त कवियों ने जो अपनी प्रतिभा दिखलायी है वह श्रेष्ठ है। उनकी भाषा में प्रांजलता, सरसता और जो मौलिकता दिखलायी पड़ती है, वैसी रीतिबद्ध कवियों में नहीं है। उन्होंने प्राकृत और अपभ्रंश के शब्दों के द्वारा पश्चिमी और पूरबी भाषा का मेल करवाया है। रसखान और घनानंद जैसे कवियों ने तो भाषा का ऐसा स्वच्छंद रूप प्रस्तुत किया कि आगे-चलकर अन्य कवियों के लिए प्रेरणा का काम किया।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि रीतिमुक्त धारा के कवि सर्वाधिक महत्व के अधिकारी हैं। इन्होंने रीति-काल के संकीर्ण दौर में भी अपनी भावानुभूति, रसात्मकता, कलाकौशल के द्वारा अपने भाषा-संगठन का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत किया है।

P.G. Semester I
CC – 3
"Riti mukt dhara ke Kavi"